ऑडियो कैसेट नं. 257 मु. 27.11.91 कम्पिल

भगवान का नारा–''शिव–शक्ति फर्स्ट''

(सिर्फ बीकेज़ और पीबीकेज़ के लिए)

ओमशान्ति। रिकॉर्ड चला है– मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में...।

किस बात से मरना है? तेरी गली माना तेरा रास्ता। जो रास्ता बताता है, उस रास्ते पर चलने के लिए किस बात से मरना है? देह–अभिमान से मरना है। और जीना तेरी गली में। उस रास्ते पर चलने के लिए जीना कैसे है? तेरे रास्ते में ही जीना है, तेरे रास्ते में ही मरना है। जीतेजी मरना है। मरना है देह–अभिमान से; क्योंकि देह–अभिमान की दुनियाँ दूसरी है। और जीना है देही–अभिमानी बनने की दुनियाँ में। माना नई दुनियाँ में जीना है। जीवन है तो कहाँ है? नई दुनियाँ में जीवन है और उस दुनियाँ में तो मरते हो। (...)

पहले ये प्वॉइन्ट समझनी है और समझानी है। पहले क्या करना है? पहले खुद समझना है कि हमको इस देह–अभिमान की दुनिया से मरना है और फिर दूसरों को ये बात समझानी भी है कि बाप कौन है। कौन है बाप? देह–अभिमानियों का बाप है कि आत्मा–अभिमानियों का बाप है? (किसी ने कहा– आत्मा–अभिमानियों का।) सिर्फ़ आत्मा–अभिमानियों का बाप है? देह–अभिमानियों का बाप नहीं है? जब मुरली में बोलते हैं– **''बच्चे! तुम्हारा बाप आया हुआ है।''** तो इसका मतलब क्या आत्मा–अभिमानियों का ही बाप आया हुआ है? देह–अभिमानियों का बाप नहीं आया हुआ है? ये आत्मा और देह दोनों की प्रवृत्ति है। बाप होता है– निराकारी और माता होती है– साकारी। साकारी माना देह–अभिमानी। माता का देह–अभिमान जल्दी नहीं टूटता है। माताओं को देह का ओना ज़्यादा रहता है और पुरुषों को उतना देह का ओना नहीं रहना चाहिए। वो आत्मिक स्टेज में माने बिंदु रूप में जल्दी टिक जाते हैं। और माता के ऊपर तो सारा वज़न पड़ता है। तो ब्रह्मा माना दादा लेखराज, जिन्होंने माता के रूप में पार्ट बजाया, जीवन रहते–2 क्या निराकारी बन गये? नहीं बन सके। क्यों? क्योंकि अगर वो आत्मा निराकारी बन जाये तो 'तेरे बहाने सर्व का भला'। उस एक का भला हो जाये तो सारी दुनियाँ का भला हो जाये। क्या कृष्ण की सोल का भला हो जाये? माना पत्ते का भला हो जाये? पत्ते का भला हो जाये तो सारे वृक्ष का भला हो जायेगा? (किसी ने कहा– ब्रह्मा का) ब्रह्मा, कृष्ण वाली आत्मा पहला पत्ता नहीं है? कृष्ण पहला पत्ता है ना! पत्ते का अगर भला हो जाये तो सारे वृक्ष का भला हो जायेगा? नहीं होगा ना! किसके भले में सबका भला समाया हुआ है? बीज। बीज भी दो तरह के होते हैं। कोई–2 बीज ऐसे होते हैं जिसमें दो दल होते हैं। सुप्रीम सोल कैसा बीज है, एक दल वाला है या दो दल वाला है? उसमें तो एक ही दल है। सुप्रीम सोल की प्रवृत्ति किसी के साथ नहीं है। सदाकाल की प्रवृत्ति वाला बीज कौन–सा है? दो दल वाला माना प्रजापिता ब्रह्मा। जो दो दल वाला बीज है, उसमें भी सुधरना किसको है? पहले किसका सुधार चाहिए, जो सबका सुधार हो जाये? (किसी ने कहा– ब्रह्मा का।) ब्रह्मा का! ब्रह्मा की सोल माना तो कृष्ण की सोल। हाँ, उस कृष्ण बच्चे की भी कोई माँ थी। आदि माता। वो आदि माता ही यज्ञ के आदि में सबसे पहले नीचे गिरी और उसका रिज़ल्ट क्या हुआ? इस रुद्र ज्ञान–यज्ञ में स्थापना के साथ–2 यज्ञ कुंड से विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। निमित्त कौन बने? ब्रह्मा और बाप। कौन–से ब्रह्मा–बाप? कृष्ण बच्चा? (किसी ने कहा– आदि का।) आदि ब्रह्मा और फिर पीछे–2 बाप भी।

माँ–बाप में ये फ्रिक्शन क्यों पड़ा? कोई बच्चे ऐसे निकल पड़ते हैं जो माँ–बाप के बीच में फ्रिक्शन डालने के निमित्त बन जाते हैं। माँ और बाप दो तो हैं। एक देह है, एक बीज है। एक साकारी है, एक निराकारी स्टेज में टिक जाने वाला है। एक बीज के दो दल हैं। इस सृष्टि रूपी वृक्ष में पहले बीज हैं– 'माता और पिता'। सुप्रीम सोल तो अलग है। अलग नहीं कहा जा सकता; क्योंकि दो दल का कनेक्शन भी (बीज में एक) बहुत छोटा–सा बिंदु होता है उससे होता है। (जिसमें से अंकुर निकलता है। उसके दो हिस्से होते हैं– एक ऊपर जाता है, एक नीचे जाता है)। वो हुआ सुप्रीम सोल बीज 'शिव'। वो तो अति सूक्ष्म है। उसकी तो बात ही निराली है; क्योंकि वो सृष्टि के चक्र में नहीं आने वाला है। चक्र में आने वाले कौन हैं? यही दो दल। एक जाता है अंडर ग्राउंड और एक जाता है अपर। ऊँची स्टेज में जाने वाला और नीची स्टेज में जाने वाला। नीची स्टेज वाला फाउंडेशन बनेगा या ऊपर वाला फाउंडेशन बनेगा? जो नीचे जाता है वो ही फाउंडेशन बनता है। ज़्यादा महत्व किसका है? (किसी ने कहा– फाउंडेशन का।) फाउंडेशन का ज़्यादा महत्व है और ऊपर वाले का महत्व नहीं है? महत्व दोनों का है; क्योंकि ऊपर का वृक्ष ही नहीं होगा, नीचे की जड़ें ही जड़ें फैलती रहें तो कोई उपयोग नहीं। और ऊपर का वृक्ष हो जाये, नीचे की जड़ें ना हों तो वृक्ष टिकेगा ही नहीं। दोनों एक दूसरे के लिए ज़रूरी हैं। सृष्टि की पैदाइश के लिए, सृष्टि रूपी वृक्ष के परिवर्धन के लिए दोनों की

आवश्यकता है। हमारा है प्रवृत्तिमार्ग। प्रवृत्तिमार्ग में माता भी चाहिए और पिता भी चाहिए। अगर दोनों में से एक की भी कमी है तो प्रवृत्ति की गाड़ी सही रूप से चल नहीं सकती। ऐसी गाड़ी हो जायेगी जैसे संन्यासियों की हो जाती है।

तो बच्चों के उत्थान का सारा आधार किसके ऊपर हुआ? माता के ऊपर। माता का अगर कल्याण नहीं हुआ; क्योंकि इस दुनियाँ में सबसे जास्ती गिरायी गई हैं माताएँ। पुरुषों ने भी माताओं को गिराया। और फिर पुरुष जब चला जाता है तो वर्सा बच्चों को मिल जाता है। माता के हाथ में फिर भी कुछ भी नहीं रहता। जब बच्ची है तो माँ–बाप के अंडर में है, वहाँ भी स्वाधीन नहीं है। जब पत्नी है तो पति की अधीनता में। और पति चला गया तो बच्चों की अधीनता में। ऐसी दुनियाँ कब होती है? सतोप्रधान दुनियाँ में ऐसा होता है या तमोप्रधान दुनियाँ में ऐसा होता है? तमोप्रधान दुनियाँ में ऐसा होता है। अब बाप आये हैं इस परंपरा को चेंज करने के लिए। अब सारी शक्ति किसके हाथ में दी जाती है? (किसी ने कहा– माताओं को देते हैं।) माता के हाथ में सारी शक्ति दी है, कोई प्रैक्टिकल प्रूफ है? (किसी ने कुछ कहा– ...) नहीं। वो तो एक कहने की बात हो गई। अभी स्वर्ग का गेट खुला तो नहीं है। (किसी ने कहा– ज्ञान का कलश माताओं को दिया) अगर ज्ञान का कलश माताओं को दिया होता तो फिर कुमारिका दादी के हाथ में होना चाहिए था। है? (किसी ने कहा– ऐसे दिखाई पड़ता है।) ऐसा दिखाई पड़ता है; लेकिन सारी पावर किसके हाथ में है? धर्मसत्ता सारी किसके हाथ में है? पुरुषों के हाथ में। ऐसा क्यों हो गया? भगवान ने जो दुनियाँ रची, भगवान की रची हुई उस दुनियाँ में आँखों के देखते ही देखते ऐसा कैसे हो गया? कारण क्या हुआ? मुरली में, अव्यक्त वाणी में कोई कारण बताया? नहीं। भूल गए। कारण ये बताया– हाँ, मूल में वो भी बात है कि पुरुष सब दुर्योधन, दुःशासन हैं। वो तो ठीक बात है; लेकिन मूल कारण स्पष्ट सीधा–2 बता दिया कि शक्तियों को पाण्डवों के द्वारा गाइडन्स नहीं दी जानी चाहिए। शक्तियाँ पांडवों से गाइडन्स लेने की अधिकारिणी नहीं हैं या पांडव शक्तियों को गाइड करने के अधिकारी नहीं हैं। गाइड कौन है? शिवबाबा है गाइड और पांडव क्या हैं? गार्ड। वो अपनी फर्ज़ अदाई करें। जितना हो सके शक्तियों की सुरक्षा करें; लेकिन उनको गाइडन्स न दें। फिर ये भी बता दिया कि अगर ऐसा नहीं होता है तो क्या होगा? ये भी बता दिया कि अगर पांडवों के गाइडन्स में शक्तियाँ चलेंगी या पांडव शक्तियों को गाइडन्स देंगे तो यज्ञ में गड़बड़ पड़ेगी। तो प्रैक्टिकल सबूत सामने आ गया या नहीं? आ गया। क्या गड़बड़ हुई? बनाने आये थे शिवालय और बन क्या गया? वैश्यालय।

शिवालय बनाने में और वैश्यालय बनाने में कौन–सा शहर आगे जायेगा? दिल्ली? दिल्ली में सबसे बड़ा वैश्यालय प्रसिद्ध है? कलकत्ता में सबसे बड़ा वैश्यालय बना है। अब ये परम्परा चेंज करनी है। कौन–सी? अब ये चेंज होना है। क्या चेंज होना है? कलकत्ते को भी क्या बनना है? शिवालय बनना है। है तो समुद्र के किनारे। बंबई, कलकत्ता, मद्रास ये हैं तो समुद्र के किनारे; लेकिन मद्रास, बंबई और विशाखापटनम से थोड़ा अंतर है। क्या अंतर है? वहाँ गंगा–सागर का मेल नहीं होता है। और यहाँ ब्रह्मपुत्रा और सागर का मेल होता है। कौन–सा शहर मेल करने के निमित्त बनता है? कलकत्ता ही निमित्त बनता है ब्रह्मपुत्रा और सागर को मेल मिलाने का। मेल काहे का? क्या शरीर का मेल? असली मेल कौन–सा है? असली मिलन–मेला कौन–सा है? संस्कारों का मिलन। वो संस्कारों का मिलन–मेला है जिससे स्वर्ग बनता है। संस्कार टक्कर न खायें। ये तो सब जानते हैं टक्कर खाते हैं। अगर टक्कर न खायें तो ये दुनियाँ नर्क क्यों बने। फिर तो स्वर्ग ही बन जानी चाहिए।

जो सृष्टि के मूल मात–पिता हैं, मूल बीज हैं, वो ही आपस में विरोधी संस्कार वाले बन जाते हैं। वो गलती भी कहाँ से आती है? बाप से गलती आती है? गलती बाप से नहीं आती। बाप तो कल्याणकारी है–हर हालत में कल्याणकारी है। मनसा में कोई भी संकल्प बाप के अंदर चलेगा, वो कल्याणकारी है। वाचा जो भी चलेगी, चाहे जो भी वाचा चले। बाप तो गाली भी देगा मुख से, तो उसमें भी कोई न कोई कल्याण समाया हुआ है। और कर्मणा कोई भी चले, हर कर्मणा में, बाप के हर कर्म में कल्याण ही समाया हुआ है। यानी जो आख़िरी रिज़ल्ट है, वो कॉन्स्टंट (निरंतर) कल्याण का ही निकलेगा। बाप से अकल्याण नहीं होता; क्योंकि वो ज्ञान का सागर है; नदी नहीं है। नदी और सागर दोनों में लिमिटेशन किसकी है और अनलिमिटेड कौन है? सागर है अनलिमिटेड। उसकी गहराई की थाह अभी तक कोई बड़े से बड़ा वैज्ञानिक निकाल नहीं सका। ये सूरज, चाँद, सितारों की लंबाई नाप लेंगे, दूरी नाप लेंगे; लेकिन सागर की गहराई का किसी को पता नहीं चला।

कलकत्ते में सागर और नदी का मेल होता है। जहाँ से होता है कलह–क्लेश कट्टा। ये कलियुग की दुनिया कट कहाँ से होती है? कलकत्ते से। कब कट होगी? जब पाण्डव गार्ड बनके रहें या गाइड बनके रहें? (किसी ने कहा– गार्ड बनके रहें।) (किसी ने कहा– शिवबाबा है गाइड।) हाँ, शिवबाबा है– गाइडन्स करने वाला और पांडव हैं– गार्ड। गार्ड माना सुरक्षा देने वाले। सारी सुरक्षा माता की करनी है बच्चों को और गाइड

करना है सिर्फ़ शिवबाबा को। उल्टा नहीं कर देना। अगर उल्टा किया, तो भल द्वापरयुग की शूटिंग चल रही है। द्वापरयुग में द्वापर की शूटिंग चल रही है। चलो, द्वापर के अंत की भी शूटिंग हो गई। द्वापरयुग में कलियुग अंत की भी शूटिंग अभी आनी है। ऐसा न हो जाये अंदर वाले रह जायें और बाहर वाले ले जायें। ये नियम बेसिक नॉलेज में भी लागू होता था। वहाँ भी क्या हुआ? अंदर वाले रह गये और बाहर वाले ले गये। वो बात यहाँ भी लागू न हो जाये कि अंदर वाले रह जायें और बाहर वाले ले जायें। बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है पांडवों के ऊपर। पांडवों का मिसाल है– देह–अभिमान से गल मरे। शक्तियों का मिसाल है? गायन है– पांडवों का। तो देह–अभिमान को स्वाहा करने का पहले कदम किसको आगे बढ़ाना पड़ेगा? पांडवों को। और पांडव देह–अभिमान में आ जायें तो क्या काम पूरा हो जायेगा? काम पूरा नहीं हो सकता। और ही अंजाम उल्टा आयेगा। और भुगतना भी पड़ेगा पांडवों को।

जैसा गायन है– **"दिल्ली है बापदादा का दिल। दिल्ली को सब फॉलो करेंगे। दिल्ली के सामने सबको माथा झुकाना है।" (अ.वा. 26.12.78)** इतना प्रभाव दिल्ली का क्यों बढ़ा दिया? मिट्टी–पत्थर के सामने माथा झुकाना है क्या? चैतन्य के सामने माथा झुकाने की बात है। माथा माना मन–बुद्धि आत्मा। ये झुकनी चाहिए। क्यों झुकनी चाहिए? ज़रूर दिल्ली ने जितना प्रैक्टिकल स्टेज में अपने को स्वाहा किया है इतना किसी ने स्वाहा नहीं किया है। एक सेवा होती है निःस्वार्थ और एक सेवा होती है स्वार्थपूर्वक। मान मिल जाये, मर्तबा मिल जाये, हमारी बात मानी जाये। ढेर सारी बातें। निःस्वार्थ जो सेवा है वो ही सच्ची ईश्वरीय सेवा कही जाती है। उसका रिज़ल्ट जल्दी निकलता है। और स्वार्थ युक्त जो ईश्वरीय सेवा होती है, उसमें कभी भी जल्दी रिज़ल्ट नहीं निकलता है। चाहे कितनी भी एड़ी–चोटी की पावर लगाके की जाये।

दिल्ली बापदादा का दिल क्यों बनी? ज़रूर सबसे आगे, सबसे पहला और सबसे जास्ती कदम उठाया होगा। और तो बाद में निकले; लेकिन दिल्ली (सबसे पहले) आगे कदम बढ़ाती है। जब विदेशियों के द्वारा बाप की प्रत्यक्षता होती है तो रिसीव कौन करता है? कोई और शहर रिसीव नहीं करता। रिसीव करना माना प्रैक्टिकल में आना। दिल्ली ही पहले प्रैक्टिकल कदम बढ़ाती है। दिल्ली को माथा तो झुकाना ही पड़ेगा। बाबा के जो भी वाक्य हैं वो पत्थर की लकीर हैं। उनका विरोध कोई नहीं कर सकता। और जब दिल्ली को माथा झुकाना पड़ेगा तो देह अहंकार उसके सामने चल नहीं सकता। बाप भी उस ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा को सरमाथे पर रखे हुए हैं। कौन है ज्ञान चन्द्रमा ब्रह्मा? वो ही माता। दादा लेखराज ब्रह्मा को तो टाइटिल मिला हुआ था। वो असली चन्द्रमा नहीं है। असली चन्द्रमा तो वास्तव में वही बड़ी माता है, जिसका सारा कार्य माता के रूप में बच्चे ने किया था; लेकिन थोड़ी त्रुटि रह गई। अब वो त्रुटि भरपायी होनी है।

माता के ऊपर से जब बाप का साया हट जाता है तो बच्चों के कंट्रोल में आ जाती है। बच्चे अगर आसुरी हैं तो माता का हार्ट फेल हो जाता है और हुआ। लेकिन अगर माता को अपना खोया हुआ पति मिल जाये और माता अपने शक्ति स्वरूप में आ जाए तो क्या बच्चों से डरके रहेगी? घबड़ायेगी क्या? नहीं। वो ही माताएँ शक्ति स्वरूपिणी बन जाती हैं। फिर क्या होता है? जिन असुरों ने ब्रह्मा का गला घोट दिया, हार्टफेल कर दिया, वो ही असुर उस महाकाली के दबोच में आ जाते हैं; क्योंकि परमात्मा बाप आकर के शक्तियों को पहले बादशाही देता है। शक्तियाँ ही आदि से लेकर के अंत तक परमात्मा बाप की सहयोगी बनती आई हैं। पुरुषों ने तो यज्ञ के आदि में भी डब्बा गोल कर दिया और मध्य में जब एडवांस पार्टी निकली तो भी डब्बा गोल कर दिया। यज्ञ के आदि में बहुत बड़े–2 परिवार के पांडव निकले हुए थे, सब ऑपोज़िशन में आ गये। और एडवांस पार्टी में भी जो निकले वो भी सारे ही ऑपोज़िशन में आ गये। शक्तियाँ अंत तक भी सहयोगी बनी रहीं। अभी भी सहयोगी बनी हुई हैं। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला– **"ऐसे मत समझो कि बापदादा अकेले हैं। अकेले नहीं हैं। शक्तियाँ तो साथ हैं ही। अभी भी हैं। और विजयमाला में भी शक्तियाँ साथ रहेंगी।"** जो निर्बल होता है परमात्मा उसी का साथ लेता है। जो दबाया जाता है परमात्मा उसी को सहयोग देता है। ये परमात्मा बाप की विशेषता है। निर्बल का बल कौन गाया हुआ है? 'निर्बल के बल राम।' 'सुने री मैंने निर्बल के बलराम' कहाँ का गायन है? कभी ऐसा प्रैक्टिकल में हुआ होगा ना।

परमात्मा बाप अब शक्तियों के हाथ में कलश देने आया है। भल लक्ष्मी के हाथ में कलश दिखाया जाता है। लक्ष्मी सतयुग की है और जगदम्बा संगमयुग की। इसका मतलब ये नहीं है कि दोनों में कोई विशेष अंतर है। नहीं। एक लक्ष्मी का राइट हैंड है तो दूसरा लक्ष्मी का लेफ्ट हैंड है। एक हाथ कलश को धारण करने वाला है और एक हाथ ज्ञान–जल बाँटने वाला है। अगर धारण करने वाला धारण ही न करे और छोड़के भाग जाये तो देवताओं को ज्ञान का कलश काम आयेगा? नहीं काम आयेगा। जगदम्बा है कलश को धारण करने वाला लेफ्ट हैंड और लक्ष्मी का जो राइट हैंड दिखाया जाता है वो है बाँटने वाला हाथ। माना विजयमाला से जो शक्ति निकलती है वो बाँटने वाली तो बनेगी; लेकिन उसने कलश को धारण (नहीं किया), उसका वज़न नहीं उठाया। और ज़्यादा मेहनत किसमें है? बाँटने में मेहनत है या धारण करने में मेहनत है?

जिसने धारण किया, जिसने वज़न उठाया, उसके ऊपर वज़न ज़्यादा पड़ता है। मेहनत ज़्यादा करनी पड़ती है। दिल्ली है बापदादा का दिल। इस दिल्ली दिल को तोड़ना नहीं चाहिए। क्या करना चाहिए? इस दिल्ली दिल को, जो दिल टुकड़े–2 हुआ पड़ा है, उसको अंत तक जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

'तेरे बहाने सर्व का भला' ये तेरे शब्द किसके लिए कहा गया? प्रजापिता के लिए कहा गया है क्या? वो तो स्वतः ही अंतिम जन्म तक भी पावरफुल आत्मा बन करके रहती है। उसकी बात नहीं है। माता ही गिरती है। माताओं को ही दुनियाँ गिराती है। दुनियाँ ने प्रकृति का जितना पलूशन (प्रदूषण) किया है उतना और किसी का पलूशन नहीं हुआ है। कुदरत ही सबसे ज़्यादा नीचे गिरायी गई है। और कुदरत भले गिरायी जाती है; लेकिन परमात्मा बाप आकर के उस कुदरत को ही सबसे पावरफुल बनाता है। भल उसमें जड़त्व है। नेचर जड़ प्रकृति वाली है कि चैतन्य प्रकृति वाली है? जड़त्वमयी है। प्रकृतिपति कहा जाता है। पति का काम क्या होता है? पाति माना रक्षा करना। भल जड़ बुद्धि है, तो भी पति का काम है उसकी रक्षा करना। 'प्रकृति' है परमात्मा बाप की पहली–2 रचना। अपनी पहली–2 रचना को परमात्मा बाप आकर के ज़रूर बादशाही देता है। इसलिए मुरली में बोला गया है– **''परमात्मा बाप से, परमपिता–परमात्मा से विश्व की बादशाही मिली जगतपिता को। और जगतपिता से किसको मिली? जगदम्बा को। और जगदम्बा से किसको मिली? सब बच्चों को नम्बरवार।''**

जो बच्चे जितने आज्ञाकारी होकर के चलेंगे, किसके? जगत् माता के। पिता तो पीछे है ही है। ये बुद्धू हैं जो समझते हैं– जय माता दी। और रात भर जय माता दी करते–2 पिता भूल जाता है। याद ही नहीं आता कि इसके पीछे कोई पिता भी है। अकेली जगदम्बा की पूजा में इतने मस्त हो जाते हैं। ऐसा नहीं है कि जगदम्बा कोई विधवा है। भारत वर्ष में विधवाओं की पूजा, मान्यता नहीं होती है। किसकी मान्यता, पूजा होती है? सधवाओं की होती है। जो 9 देवियाँ हैं वो सब सधवाएँ हैं। हैं तो नम्बरवार। एक जैसी तो नहीं हैं। एक जैसी सबकी पूजा भी नहीं है। जो नम्बरवार देवियाँ हैं, उनमें जो शक्तिरूपिणी है, उसका नाम क्या है? दुर्गा। दुर्गुणों को दूर करने वाली। जैसे नेचर के लिए कहते हैं कुदरत सारा काम कर देती है। लोग क्या कहते हैं? अरे! कुदरत सब ठीक कर देगी। कुदरत के जो नियम हैं वो अटल हैं। जिसके नियम अटल हैं उसको बनाया किसने? ज़रूर सुप्रीम सोल बाप ने ही उसकी रचना की है और करायी है। ऐसी जो शक्ति है, जो इस दुनियाँ से सारे दुर्गुणों को नाश करने वाली है। कब नाश करती है? जब परमात्मा बाप का उसको सहयोग मिलता है। तो परमात्मा बाप इस संगमयुग में उन शक्तियों को सहयोग देने के लिए आया हुआ है। जिसका बाप सहयोगी है, उसका (एवर लास्टिंग) विरोध कोई नहीं कर सकेगा। विरोधी को माथा झुकाना ही पड़ेगा। अगर माथा नहीं झुकाते, अहंकार में आते (...)

रुद्रमाला में भी और विजयमाला में भी शक्तियाँ अनेक हैं और शिव एक है। जो भी शक्तियाँ हैं उन शक्तियों की माँ जगदम्बा गाई हुई है। सारे जगत की अम्बा। जगदम्बा कहो, ब्रह्मा कहो। ब्रह्म माना बड़ी, मा माना माँ, बड़ी माँ। बड़ी माँ के सामने बच्चों को कोई अहंकार नहीं करना चाहिए। आख़िरी हमारी गली कौन–सी हुई? रास्ता कौन–सा हुआ? माता गुरु। अगर माता को गुरु नहीं बनाया तो कभी भी उद्धार हो नहीं सकता। माता गुरु को परमात्मा बाप आकर के झुक रहा है। 'वंदेमातरम्' क्यों कहा? 'वंदेपितरम्' क्यों नहीं कहा? क्यों नहीं वंदना की? क्योंकि माताओं में जितनी कॉन्सटंट में (स्थिर) प्यूरिटी होती है उतनी भाइयों में, पुरुषों में नहीं होती है। एक बात अलग हो सकती है दूरबाज़–खुशबाज़ वाली; लेकिन दूरबाज़–खुशबाज़ वो तो संन्यासियों की पवित्रता हो गई। बाप ऐसी पवित्रता नहीं सिखाते हैं। बाप तो सिखाते हैं भले नज़दीक भी रहें, साथ भी रहें; लेकिन पवित्र रहें। ये प्यूरिटी माताएँ धारण कर पाती हैं; क्योंकि उनमें भावना का पुट ज़्यादा होता है। पुरुष होते हैं बुद्धिवादी। इसलिए उनमें वो बात नहीं आती है, जो भावना की बात आनी चाहिए। भक्ति और भावना, उसको सीता कहा जाता है। सीता और राम। राम एक और सीताएँ अनेक। अव्वल नंबर सीता कौन–सी हुई? जिसको गीता नाम दिया गया, जिसको दुर्गा नाम दिया गया, जिसको जगदम्बा नाम दिया गया, जिसको दिल–दिल्ली नाम दिया गया। एक के अनेकों नाम हैं। जैसे शिव के नाम अनेक हैं, वैसे शक्ति भी एक है और उस शक्ति के नाम अनेक हैं। परमात्मा शिव है पीछे बैकबोन के रूप में और शक्तियाँ हैं आगे। बाप शक्तियों को ही आगे करते हैं। इसमें हम ब्राह्मण बच्चों को बहुत गौरव होना चाहिए। दुनियाँ जिस बात को, जिस राज़ को नहीं जानती उस राज़ को हमने जान लिया। आख़िर माता तो हमारी है ना। हम मातेले बच्चे हैं या सौतेले बच्चे हैं? मातेले बच्चे हैं ना। हम बाप के मातेले बच्चे हैं तो हमने बाप को भी अच्छी तरह पहचाना और माँ को भी अच्छी तरह पहचाना। ये गुरु जो हैं, बीच में ऐसी पढ़ाई पढ़ा देते हैं जिससे सब टंडिला (ज्ञान) उल्टा हो जाता है। उन गुरुओं को परखना है।

ये बीच में धर्मगुरुगिरी करने वाले गुरु कौन–से हैं? वो गुरु आधारमूर्तों की दुनियाँ में भी होते हैं और बीजरूप आत्माओं की दुनियाँ में भी ऐसे गुरु हैं, जो कुछ का कुछ कर देते हैं अपनी कमज़ोरी के कारण।

अपनी कमज़ोरी को समझते भी हैं कि हमारे अंदर ये कमज़ोरी है; लेकिन उस कमज़ोरी को समझते हुए भी ख़त्म नहीं कर पाते हैं और दूसरों के मत्थे मढ़ देते हैं। ये गुरुओं का काम है अपना प्रभाव आगे करना और जिसका असली प्रभाव है, जिसका प्रभाव बढ़ाना चाहिए उसके प्रभाव को कम कर देना। लेकिन बाप आया हुआ है। बाप तो सर्वशक्तिवान है। वो बाप गुरुओं का भी गुरु है। बापों का भी बाप है। और पढ़ाई पढ़ाने वालों का भी टीचर है। टीचर्स का भी टीचर। सुप्रीम टीचर। अब कितनी भी पढ़ाई पढ़ायी जाए। जब वो इनडायरैक्ट था तब तो बात चल जाती थी। अभी तो वो इनडायरैक्ट नहीं है। अगर ऐसा समझते हैं कि वो अभी भी बिंदु है तो ये बहुत भारी भूल है। क्योंकि अभी तो ज्ञान की पढ़ाई इतनी ऊँची चल रही है, जिस ऊँची पढ़ाई में 'जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये'।

राम बाप क्या चाहता है? बच्चे किसके कंट्रोल में चलें? माता के कंट्रोल में चलें। परिवार वो ही शोभता है जिस परिवार में बच्चे माँ के कंट्रोल में हों। क्योंकि बाप को बाहर संभालना है या परिवार में, घर में संभालना है? बाप कहाँ संभालेगा? झाड़ के चित्र में ध्यान से दखो। जो नीचे माँ–बाप बैठे हुए हैं, वो बाप विदेशियों की तरफ़ बैठे हुए हैं, बाहर वालों को कंट्रोल करने के लिए। और माँ भारतवासियों को कंट्रोल करने के लिए बैठी हुई है। माँ के कंट्रोल में भारतवासियों को तो ज़रूर रहना चाहिए। अगर समझते हैं हम विदेशी हैं, तो फिर बाप बैठा हुआ है। मातेले बनना है या सौतेले बनना है? मातेले बनना है–हर हालत में मातेले बनना है। इसलिए मुरली में बोला है कि **"माता की भी बात माननी चाहिए।"** 'भी' शब्द लगा हुआ है। क्यों लगा हुआ है? कि पिता की तो माननी ही माननी है; लेकिन माता गुरु की भी बात ज़रूर माननी है। अगर कहीं कॉन्ट्रेडिक्शन (परस्पर विरोध) दिखाई पड़ता है कि ये ब्रह्मा बोल रहा है। ये इसका डायरैक्शन नहीं है। ये बाबा के बरखिलाफ़ बोल रहा है। तो मुरली में बाबा ने डायरैक्शन दिया हुआ है– तुम यही समझो कि बस, शिवबाबा ऐसा ही चलाना चाहता होगा। तुम ये मत समझो, ये ब्रह्मा का डायरैक्शन है। अगर कुछ उल्टा–सीधा हो भी गया तो ज़िम्मेवारी किसकी है? बाप की ज़िम्मेवारी है। तुम चिंता मत करो। अगर कुछ उल्टा हो जाता है तो जिसने डायरैक्शन दिया उसके ऊपर उसका पाप जायेगा या तुम्हारे ऊपर जायेगा? जिसने डायरैक्शन दिया उसके ऊपर जायेगा और उसको सम्भालने के लिए बाप बैठा हुआ है। तुम क्यों चिंता करते हो! तुम अपनी सारी ज़िम्मेवारी बाप को दे दो। अपने ऊपर कोई ज़िम्मेवारी मत उठाओ। हल्के हो जाओ। हल्के होने में ही फ़ायदा है। 63 जन्म वज़न ढोते रहे। अब ये एक जन्म आया हुआ है हल्के बनने का। इसमें माथा मुड़ा लेना चाहिए। क्या मतलब? माया से माथा नहीं मुड़ा लेना चहिए। जो जैन मुनि होते हैं, वो सब बाल उखड़वा लेते हैं।

बाल उखाड़ने का मतलब क्या हुआ? अब विकारों का जो वज़न है, वो ख़तम कर देना। विकारों को जड़, से उखाड़ देना। और इन सबका मूल है देह अहंकार। इस देह अहंकार को अब नहीं पनपने देना है। ये पाँच विकारों का बाप है। अगर इसको हमने पनपने दिया तो शिवबाबा याद नहीं आयेगा। और शिवबाबा याद नहीं आयेगा तो संघर्ष में ही सारी ज़िंदगी चली जायेगी। संकल्पों का खून बहता रहेगा। इतनी बड़ी दुनियाँ है किससे–2 टकराएँगे। अभी बाप का प्यार लेने का टाइम है या दुनिया से टकराने का टाइम है? अभी थोड़ा–सा समय है। 'बहुत गई थोड़ी बची, थोड़ी में भी थोड़ी बची।' अब टकराने का टाइम नहीं है। अब तो 'एक बाप दूसरा न कोई'। एक बाप दूसरा न कोई, तो इसका मतलब ये नहीं है कि अम्मा कोई है ही नहीं। वो भी तो बाप का ही रूप है। वो भी तो बीज रूप आत्मा है। दोनों ही रुद्रमाला के मणके हैं ना। इसलिए मुरली में बोला है कि **"एक विशेष आत्मा का ही पार्ट है। माँ का भी पार्ट है तो बाप का भी पार्ट है।"** माँ का पार्ट और बाप का पार्ट दोनों कैसे है? दादा लेखराज के तन में? दादा लेखराज के तन में तो अम्मा का पार्ट चला। बाप का पार्ट तो कभी चला नहीं। वो ज्ञान का बीज बोने वाला भी साबित नहीं हो रहा है और वो वर्सा देने वाला भी साबित नहीं हो रहा है। फिर कौन–सा ब्रह्मा है जो आदि में बाप भी है और माता भी है? आदि ब्रह्मा, आदि माता वो ही दूसरा जन्म लेकर के अगला जन्म लेकर के, उसमें ब्रह्मा की सोल प्रवेश करती है और प्रवेश करके माता का भी पार्ट बजाती है। माना स्नेहमयी भी बनती है; लेकिन कौन से बच्चों के प्रति? मातेले, आज्ञाकारी बच्चों के प्रति। अगर विदेशियों के प्रभाव में हैं, विदेशियों का संग लगा पड़ा है तो फिर उनकी चाल ही ऐसी हो जावेगी कि जो लेना चाहिए वो नहीं ले सकेंगे।

माता तो ममतामयी होती है; लेकिन दादा लेखराज के तन में जो माँ का पार्ट बजा और अब जो माँ का पार्ट चलना है, उसमें अंतर तो ज़रूर होगा। दादा लेखराज के तन से क्या असुर संहारिणी का पार्ट चला था? नहीं। फिर किसके द्वारा चलेगा? ज़रूर कोई ऐसी शक्ति संसार के सामने आयेगी जो ब्रह्मा के जस्ट ऑपोज़िशन में पार्ट बजायेगी। और ऑपोज़िशन में आकर के जब पार्ट बजायेगी तो उसके पीछे से शक्ति देने वाला भी ज़रूर कोई होगा। इसलिए दुनियाँ कहती है– 'तुमरी गति मति तुम ही जानो, और न जाने कोय'। ज़्यादा फ़ालतू में हमको जाने की दरकार क्या? हम तो माँ–बाप के सीधे–साधे बच्चे हैं। माता–पिता हमको जैसे चलायें, हम वैसे ही चलेंगे। हम तो भारतवासी बच्चे हैं ना। हम कोई विदेशवासी बच्चे थोड़े ही हैं।

भारतवासियों का ये विशेष फर्ज़ हो जाता है कि वो मातेले बन करके रहें। माता की गोद का प्यार लें। माता की बुद्धि में ये सिक्का बैठ जाना चाहिए कि ये मेरे असली बच्चे हैं। ये मेरा अंत तक साथ निभाने वाले हैं। कभी भी धोखा देने वाले नहीं हैं। क्योंकि बाप माताओं के द्वारा स्वर्ग का उद्घाटन कराने आये हैं। माताओं को विश्व की बादशाही देने के लिए आये हैं। माताओं को आगे रखते हैं। इसमें पांडवों को कोई अहंकार नहीं आना चाहिए। अगर पांडवों को अहंकार आता है तो इसका मतलब जो मरना तेरी गली में, वो सच्ची गली अभी हमने पहचानी नहीं है। गली सँकरी ज़रूर है; लेकिन यही ब्रॉड वे हो जायेगा। दिल्ली में भल अभी तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते हैं; लेकिन क्या अंत तक ऐसा ही रहेगा? अंत तक ऐसा तो नहीं रहेगा। पांडवों के लिए ही गायन है कि उनको 3 पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे। शास्त्रों में भी लिखा हुआ है– पांडवों ने जो गुप्त पार्ट बजाया वनवास का, उनको अगर दुनियाँ में कहीं जगह मिली थोड़ी–बहुत बड़ी तो बस, काम्पिल्य नगर में ही मिली। वो भी कुम्हारों के घर में। कुम्हार माना मिट्टी के बर्तन बनाने वाले के घर में। मिट्टी का बर्तन बनाने वाला कौन? प्रजापति। कुम्हार लोग अपने को प्रजापति लिखते हैं। 'प्रजापति' अक्षर कहाँ से आया? यहाँ की यादगार है ना। कुम्हार माना मिट्टी के बर्तन बनाने वाला। सुप्रीम सोल मिट्टी का बर्तन नहीं बनाता है। मिट्टी का बर्तन कौन बनायेगा? जो खुद मिट्टी होगा। प्रजापति माना प्रजापिता, वो है मिट्टी का लोंदा। उसमें भी रूह फूँकने का काम करता है सुप्रीम सोल शिव। सुप्रीम सोल शिव प्रजापति को आधार बनाता है कि पांडव वहाँ जाकर के शरण लें। तीन पैर पृथ्वी उनको काम्पिल्य नगर में मिलती है। ये गायन है शास्त्रों का, लंबे समय तक पांडवों ने वहाँ गुप्त वास किया; लेकिन पांडवों को दिल्ली में तीन पैर पृथ्वी का स्थान नहीं मिला। उसमें हमें क्या करना चाहिए? हमें कोशिश ये और करनी चाहिए कि दिल्ली में तीन पैर पृथ्वी का स्थान नहीं मिला है तो हम और दिलवाएँ। या उसमें हमें नाराज़ होने की बात है? या दुखी होने की बात है? नहीं। इसमें तो और हमें खुश होना चाहिए कि बाबा ने जो बातें कही हैं वो हमारे ऊपर लागू हो रही हैं। हम पांडवों के ऊपर ये बातें लागू हो रही हैं।

पांडवों के साथ जो द्रौपदी थी, उस द्रौपदी का जन्म कहाँ हुआ? पांचाल (नगर)। कौन–सा हुआ? दिल्ली? अरे! यहीं द्रौपदी कुंड बना हुआ है। काम्पिल्य नगर में जन्म हुआ। जन्म होने का मतलब प्रत्यक्षता रूपी जन्म। ध्रुव पदी। पांडवों का पद ध्रुव नहीं हुआ और द्रौपदी का पद ध्रुव हो गया। पहले से निश्चित हो गया। जो पद ध्रुव है, निश्चित है, जिसको कोई टाल नहीं सकता। बाबा भी कहते हैं– **"बाप भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ है।"** बाप कुछ कर नहीं सकते हैं। जब बाप ही कुछ नहीं कर सकते हैं तो क्या बच्चे कुछ कर सकेंगे? ड्रामा का ऑपोज़िशन कर सकेंगे? ड्रामा तो टिक–2 टिक–2 करके चलेगा। अपना टाइम होगा तब दोनों सूइयाँ जाकर के मिलेंगी। छोटी सूई भी मिलेगी, बड़ी सूई भी मिलेगी और घंटे बजेंगे। ज्ञान के घंटे बजेंगे और परमात्मा बाप संसार में जो कार्य करने के लिए आया हुआ है वो कार्य सम्पन्न होगा।

किसी भी बात में हमको धैर्य नहीं खोना चाहिए। ये विदेशियों की परम्परा है, फॉरेनर्स की परंपरा है कि जो भी काम करना है बहुत जल्दी कर लो। इसलिए फॉरेनर्स की क्वालिटी क्या बताई? फौरन। फॉरेनर माना फौरन। बहुत जल्दी करने वाले। और हिंदुस्तान में बोला जाता है– 'जल्दी का काम शैतान का होता है।' शैतानियत ये विदेशियों की परंपरा है। जल्दी करना ये विदेशियों की परम्परा है। 'सहज मिले सो दूध सम, माँग लिया सो पानी और खींच लिया सो खून बराबर।' अगर खींच–2 करके हमने कोई काम कर लिया, अपनी इच्छा की पूर्ति कर ली तो वो खून हो जायेगा। जैसे किसी का खून पी लिया। उसका रिज़ल्ट क्या होगा? पाप बनेगा या पुण्य बनेगा? पाप ही बनेगा। हम आये हैं पुण्य आत्मा बाप के बच्चे बनने और हम पाप कर बैठें, ये तो शोभता नहीं है। जितना सहज–2 जो कुछ हमको प्राप्ति होती है, माता से प्राप्ति होती है, बाप से प्राप्ति होती है वो सहज–2 प्राप्ति करते चलें। हमारा काम है पुरुषार्थ करना। पुरुषार्थ माना आत्मा के अर्थ। ऐसे नहीं कहा– देह अर्थ। माना स्वार्थ नहीं कहा। स्व रथ माने अपने रथ के लिए नहीं करना है। किसके लिए करना है? आत्मा के अर्थ। आत्मा का कल्याण करना है। आत्मा कोई किसी एक देश विशेष से बँधी हुई नहीं है। देश विशेष से बँधा हुआ है शरीर। आत्मा का घर कौन सा है? देह–अभिमानी हैं तो देश विशेष के प्रति बुद्धि जाती है। अगर आत्मा–अभिमानी हैं तो जो बाप का घर सो हम बच्चों का घर। फिर हमारी बुद्धि में खींचा–तानी नहीं चलनी चाहिए। अगर चलती है तो हम देख लें हम कितने देह–अभिमानी हैं और कितने आत्मा–अभिमानी हैं। अभी तो बाप आया हुआ है। हम देह–अभिमानी बच्चों को आत्मा–अभिमानी बनाने के लिए। और ये भी गैरंटी करता है कि सिर्फ़ 21 जन्मों की ही बात नहीं है। 21 जन्म ही तुम बच्चे आत्मा–अभिमानी बन करके सुख नहीं भोगेंगे। 21 जन्मों के आधार पर 63 जन्मों का भी हिसाब–किताब बन जाता है। जो 21 जन्मों में 100 परसेंट लंबे समय तक आत्मा–अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करेगा वो 63 जन्मों में भी आत्मा–अभिमानी बन करके सुख भोगेगा, शांति भोगेगा। उसको कोई दुखी नहीं कर सकता। देखने वाले लोग भल समझें कि इसके ऊपर बड़ी आफतें आईं; लेकिन वो अपने अंदर महसूसता नहीं करेगा। महाराणा प्रताप ने जब घास की रोटियाँ खाईं तो क्या उनको अंदर से आँसू आया होगा कि आहऽऽ हाऽऽ

हमको घास की रोटियाँ खानी पड़ीं! कितना दुख आ गया! हमसे ज़्यादा दुखी इस दुनियाँ में कोई नहीं। ऐसा उनके अंदर भाव आया होगा? नहीं। उस आत्मा के अंदर सुख–शांति का आगार बस रहा था। वो आत्मा तो अपने ऊपर और खुश होगी कि मेरा ऐसा पार्ट है, देश की सुरक्षा के लिए! स्वाभिमान जगेगा। जहाँ स्वाभिमान होता है वहाँ किसी प्रकार का दुख महसूस हो ही नहीं सकता। सुख और दुख ये अपने मन को कंट्रोल करने की बात है।

कोई कहते हैं– सहन करना पड़ता है। अरे! सहन करना पड़ता है इसका मतलब ये है कि तुम्हारी आत्मा कमज़ोर है। जब आत्मा में कमज़ोरी है तो सहन करना महसूस होता है। और आत्मा अगर पावरफुल है तो सहन करना, सहन करना नहीं लगेगा। हर हालात में आत्मा अपने को सुखमय, शांतिमय स्टेज में महसूस करेगी। ये अवस्था बनानी कहाँ है? इस अवस्था का बनाना इस टाइम पर होना चाहिए। चाहे कैसी भी स्थिति हो, कैसी भी परिस्थिति हो, कैसे भी व्यक्ति संसर्ग–सम्पर्क में आने वाले क्यों न हों, कैसी भी समस्याएँ पैदा करने वाले क्यों न हों; लेकिन हमारी आत्मा सुख, मौज में मस्त बनी रहे। लेकिन ये कब होगा? ऐसा कब होगा? ऐसी आत्मा–अभिमान की, स्वाभिमान की ताकत हमारे अंदर कब आयेगी, जो हमारा वायब्रेशन ऐसा मज़बूत बन जाये, पावरफुल बन जाये? जब हम आत्मिक स्टेज में स्थित होंगे। अपने को आत्मा समझेंगे। देहभान से बिल्कुल परे। मैं एक आत्मा बाप का बच्चा हूँ। आत्मिक स्थिति में मैं शिववंशी बाप का बच्चा हूँ। और देह के रूप में माना ब्राह्मण के रूप में मैं मात–पिता का बच्चा हूँ। बस, माता–पिता और कुछ नहीं। सारी दुनियाँ मर गई। इतने बड़े विश्व के अंदर तुम बच्चों के लिए अपना ही छोटा–सा संसार है। छोटा–सा संसार माना? कौन–सा छोटा–सा संसार? बस, मात–पिता। मात–पिता की गोदी, बस यही हमारा संसार हो गया। अगर ऐसी स्टेज बन गई, तो आत्मिक स्टेज पक्की होने पर उस आत्मा में जितनी पावर आ जायेगी, भल इस विनाश की दुनियाँ के बीच में वो आत्मा रहेगी, चारों तरफ़ खून बह रहा है, खून की नदियाँ बह रही हैं; लेकिन वो आत्माएँ अपने को बहुत आनंद में महसूस करेंगी। शांति की स्टेज में महसूस करेंगी। किसी प्रकार का फ्रिक्शन बुद्धि में नहीं आ सकता। अब ऐसी स्टेज बनाने का बहुत थोड़ा–सा टाइम रह गया है।

ये अमृतवेले का बहुत सुहावना समय चल रहा है। बेहद का समय चल रहा है। बेहद का अमृतवेला। हद का अमृतवेला और बेहद का अमृतवेला। महत्व दोनों का है; लेकिन बेहद के अमृतवेले तक पहुँचना है और अपना पूरा पुरुषार्थ पक्का करना है। अब नहीं तो कब नहीं। तो बच्चों को अतीन्द्रिय सुख तब फील होता है जब निश्चय करते हैं कि हम बेहद बाप की संतान हैं। बेहद का बाप, तो माता भी ज़रूर बेहद की होगी। हमें बेहद का बाप और बेहद की माता दोनों मिले हैं या एक ही मिला है? बेहद का बाप भी मिला है तो बेहद की जगत माता (भी मिली है)। बेहद माना? सारे जगत, माना 500 करोड़ की माता। भल विदेशी माता को नहीं मानते हैं। नहीं मानते हैं तो वो माता नहीं होती है क्या? नहीं मानते हैं तो भी माता होती है। कोई ऐसे होते हैं जो अपने बाप को नहीं मानते। नहीं मानते हैं तो भी उनका बाप होता ही है।

हम बेहद बाप की संतान हैं। बस, इस एक ही बात से खुशी का पारा चढ़ जाता है। ये है मीठी स्थायी खुशी। स्थायी खुशी का प्वॉइन्ट है। तुम जानते हो हम अपने को ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहलाते हैं। ये है नई रचना। तो पहले सबको निश्चय कराना है कि यह तुम्हारा बाप है। बाप के नीचे फिर है विष्णु। बाप के नीचे सबसे पहले कौन है? ब्रह्मा भी बाद में और शंकर भी थोड़ा दूर है। ज़्यादा नज़दीक कौन है? विष्णु। विष्णु माना? दोनों का कॉम्बिनेशन। कौन–2 दोनों का कॉम्बिनेशन? माता और पिता के स्वभाव–संस्कार मिलकर के एक हो जायें, वो ही स्वरूप सम्पन्न रूप है मात–पिता का। और वो हमेशा हमारी आँखों के सामने रहना चाहिए।

जैसे बाप कहते हैं– मैं तुम बच्चों का वर्तमान रूप नहीं देखता हूँ। कौन–सा रूप देखता हूँ? भविष्य रूप, सम्पन्न रूप देखता हूँ। ऐसे ही बाप से विष्णुपुरी का वर्सा मिलता है। ये नहीं कहा ब्रह्मापुरी का वर्सा मिलता है। शंकरपुरी का वर्सा मिलता है। कौन–सा वर्सा मिलता है? विष्णुपुरी का वर्सा मिलता है। जिसमें लव और लॉ, दोनों का कॉम्बिनेशन हो जाता है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए। ये निश्चय करा करके फिर लिखा लेना चाहिए कि हमको एक बाप से विष्णुपुरी का वर्सा मिलना है। कौन–सा वर्सा? जहाँ माता और पिता दोनों के संस्कार मिलकर के एक हो जायेंगे। ये अटल निश्चय रखना चाहिए। अगर ये निश्चय हिला कि ये तो मिल करके कभी एक नहीं हो सकते। अरे! परिवर्तन कराने के लिए कौन आया हुआ है? सुप्रीम सोल बाप आया हुआ है। वो तो परिवर्तन करा करके ही जायेगा। असंभव को संभव करने का युग है। उसमें कभी भी निश्चय से नीचे नहीं आना चहिए। कभी भी किसी बात में, इस बात में अनिश्चय बुद्धि बनना ही नहीं है।

भारतवासी अच्छी तरह जानते हैं कि यह देवी–देवताएँ निर्विकारी थे। कौन से देवी–देवताएँ? विष्णु रूप। जिनका महालक्ष्मी का रूप दिखाया गया है। उनमें कॉम्बिनेशन है स्त्री–पुरुष का। विष्णु रूप दिखाया

गया है। कॉम्बिनेशन है मात–पिता का। स्वर्ग में इन्हों का पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था। किन्हों का? विष्णु का। स्वर्ग में पवित्र प्रवृत्तिमार्ग था और अभी नहीं है। अभी वो लोप हो गया है। पवित्र प्रवृत्तिमार्ग प्रायः लोप हो गया है। माना देवी–देवता सनातन धर्म प्रायः लोप हो गया है। फाउंडेशन सड़ गया है। फाउंडेशन माना जो जड़ सड़ गई है, उस जड़ को फिर से हराभरा सरसब्ज बनाना है। उस जड़ को फिर से प्रत्यक्ष करना है। वो तो नीचे दबी हुई रहती है। जो चीज़ नीचे दबी हुई हो उसको हमें प्रत्यक्ष करना है।

इन्हों का प्रवृत्तिमार्ग था। गाते भी हैं– आप सम्पूर्ण निर्विकारी, हम विकारी। सतयुग में सम्पूर्ण निर्विकारी हैं और कलियुग में सम्पूर्ण विकारी हैं। विकारी को पतित, भ्रष्टाचारी कहो बात एक ही है। पतित, भ्रष्टाचारी माना विकार में जाने वाले। क्रोधी को पतित, भ्रष्टाचारी नहीं कहा जाता है। क्रोध आयेगा तो आँखें लाल होंगी। चेहरा तमतमायेगा। मुख से उलट–सुलट बातें निकलेंगी। बहुत कुछ होगा तो हाथ चल जायेगा। पाँव चल जायेगा। इसको भ्रष्टाचारी नहीं कहा जाता। भ्रष्टाचारी किसको कहा जाता है? पतित होने वाले को। पतित माना जिससे शक्ति क्षीणता की ओर जाती है। शक्ति क्षीण हो जाये। शक्ति पात हो जाये। उससे होता है पतितपना। क्रोध तो संन्यासियों में भी बहुत होता है।

पहले–2 परिचय देना है बाप का। बाप का क्या परिचय देना है? संन्यासियों में क्रोध बहुत होता है। ये बाप के साथ संन्यासियों का कैसा मेल मिला दिया? क्या मुरली टूट गई? मुरली का जो प्रसंग है, वो प्रसंगांतर हो गया क्या? क्रोध संन्यासियों में भी बहुत होता है। पतित कौन बनता है पहले? ज़्यादा से ज़्यादा पतित कौन बनता? जो सृष्टि के बीज हैं, वो ही तो नीचे गिरते हैं। किस रूप में नीचे गिरते हैं? नीचे गिरने का मूल कारण क्या हुआ? काम विकार ना!

पहले–2 बाप का परिचय देना है। ऊँचे ते ऊँचा बाप जब भारत में आता है तो ये महाभारी महाभारत लड़ाई लगती ज़रूर है। कौन–सी महाभारी महाभारत लड़ाई? इसका फाउंडेशन कहाँ से पड़ता है? महाभारत क्यों कहा गया? महा अमेरिका क्यों नहीं कहा? महा अफ्रीका क्यों नहीं कह दिया? क्योंकि भारत से ही ये लड़ाई की शुरूआत होती है। भारत माना मात–पिता का देश। मात–पिता माना जगतपिता–जगदम्बा। जगतपिता–जगदम्बा के संस्कारों का जो टकराव है, वो कोई एक घर की बात नहीं है। वो घर–2 की कहानी है। ये संस्कारों का टकराव ख़त्म करने के लिए हमें निमित्त बनना है या टकराव बढ़ाने के निमित्त बनना है? क्या करना है? टकराव ख़त्म हो जाये, इसके निमित्त बनना है। हमको आग और भड़कानी नहीं है; लेकिन आग और बुझानी है। कैसे बुझेगी? आग को बुझाने के लिए क्या आग डाली जाती है? पानी डाला जाता है। स्नेह का पानी डालो। जो ज्ञानयुक्त बातें हैं वो भी स्नेह का पानी हैं। (ओमशांति)